Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

ॐ

|| Whole World is a Family ||

7-2-2019
गुरुवार

पंतग

सभी पुण्यआत्माओं को मेरा नमस्कार - - - -

अभी हाल ही मे हुयी घटना है। परसो के दिन मकर संक्रान्ती का उत्सव था तो घर पर मैंने पोते को "पंतग" उडाना सीखाने के लिये पंतगे मंगवायी पोता छोटा था तो पंतगे भी छोटी छोटी ही मंगवायी थी छोटी "पंतग" को देखकर पोते ने पुछा क्या "आबा" छोटी पंतग भी उड सकती है, क्या? मेरी टिचर ने कहा था आकाश मे केवल बडी पंतग ही उडती है, मैंने उसे समझाते हुये कहाँ पंतग का "आकार", रंग, डिझाईन, कुछ भी हो पर प्रत्येक पतंग उडे ऐसी ही पंतगबनाने वाले बनाते है, और प्रत्येक पंतग आकाश मे उड सकती है, बस उडाने के इच्छा होनी चाहीये।

बाद मे उसे वही छोटी पंतग आकाश मे ऊपर तक
उडा कर दिखाई तो पोता खुश हो गया और उसका
"भ्रम" टूट गया की आकाश मे केवल बडी पंतग ही
उड सकती है,

आज पता नही क्यु वह घटना याद आ गयी अपने
साधको को भी ऐसा ही लगता है, की आध्यात्मीक
प्रगती केवल साधु, संन्यासी, ही कर सकते है, या
कुछ विशेष साधक ही कर सकते है, मै नही कर
सकता क्योकी मेरी स्थिती अच्छी नही है, मेरा तो
"ध्यान" ही नही लगता मुझे तो ध्यान मे कई विचार
आते है, स्वामीजी जैसी "मुक्त अवस्था" कभी मै जिवन
मे प्राप्त ही नही कर सकता लेकीन "बच्चो" ऐसा
सही नही है, "परमात्मा" ने हम सब को बनाया है,
हम सभी मे "परमात्मा" समान रूप से विद्यमान है,
परमात्मा कभी किसी को कम या अधीक नही देता
है, सभी को समान रूप से अवसर देता है, आपका
लिंग, जाती, भाषा, धर्म, देश भले ही अलग हो पर
हम सभी के भितर आत्मा समान रूप से बैठा
है, जिस प्रकार से पंतग बनाने वाला प्रत्येक पंतग
उडे ऐसी ही बनाता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

ठिक वैसे ही आप सभी अपने जिवन काल मे एक "साक्षी" भाव ला कर अपने आप को देखे और शरीर मे रहते हुये भी "आत्मा" होने का एहसास करे इसी दृष्टी को देखकर परमात्मा ने प्रत्येक को बनाया है, हम "आत्मग्लानी" के कारण ही अपने आप को छोटा समझते है, अपने आप को कभी छोटा मत समझो आप तो पुन्य आत्मा हो आप के पास परमात्मा की कृपा मे वह "दिव्य शरीर" मीला है. जो आत्मसाक्षात्कार का अनुभुती पा सका

"आत्मसाक्षात्कार" पाना प्रत्येक आत्मा का लक्ष्य होना है, आपने इस लक्ष्य को पाने के लिये कई जन्म लीये है, अब पा लीया है, तो आगे बढो केवल आत्मसाक्षात्कार पा के कुछ नही होगा नियमीत सामुहीक रुप मे ध्यान करो इस वैचारीक प्रदुषण वाले जगत मे सामुहीकता के बीना "आध्यात्मीक प्रगती" संभव ही नही है, अच्छी सामुहीकता मे रहो मेरे बचपन मे पेन नही थे हम एक दवात (शाई की बोतल) रस्सी से बांधाकर स्कुल मे जाते थे और लिखने के लीये एक टांक (पेन) रहता था उस टांक को प्रत्येक अक्सर लिखने बाद शाई की बोतल मे डुबो डुबो कर लिखना पडता था, और सफेद शर्ट और निली हॉफ पेंन्ट या स्कुल का ड्रेस था,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

मेरा एक प्रिय मीत्र मेरे पास ही बैठता था और पेन मे अगर शाई अधीक आ जाये तो वह जमीन पर "छिंटता" था लेकीन एक बार उसने मेरे शर्ट पर ही छिंट दी मैंने कहाँ जो हो गया सो हो गया। अब ऐसा बाद मे मत करना तो दुसरे दिन भी उसने वही गलती फीर से की फिर मैंने उसे कहाँ ऐसा मत किया कर कपडे मेरे खराब होने पर मैंने कहा मेरी नानी मुझे डांटती है, लेकीन तीसरे दिन भी उस मीत्र ने अपनी "आदत" के अनुसार फीर से शाई मेरे शर्ट पर छींट दी तो बाद मे मैंने उस मीत्र का साथ ही "छोड" दिया और उससे दुर ही बैठने लग गया।

आप भी अपना निरीक्षण करो "आपके आसपास भी ऐसे "मीत्र" हो रिश्तेदार हो साधक हो जो सदैव अपनी नकारात्मक बातो का कचरा आपके चित्त मे डाल जाते हो तो आप भी उनसे दुर ही रहो।" हम यह अवश्य कर सकते है, हम जिवन मे अपने आप को छोडकर किसी को भी बदल नही सकते है, इस लिये कीसी को भी बदलने की कोशिश मत करो पती पत्नी को और पत्नी पती को भी बदलने की कोशीश न करे आप स्वयंम बदल जाओ पार्टनर भी बदल जायेगाँ।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

प्रत्येक सुबह उठो तो आज मेरा "पहला दिन" ही जिवन का है, यह मान कर उठो तो भुतकाल का भार नहीं होगा और यह मेरे जिवन का "आखरी दिन" है यह समझ कर दिन भर कार्य करो तो आपसे बुरा कर्म होगा ही नहीं जिवन मे "आंनद" के पीछे भागो मत आनंद के लिये आप दुसरो पर निर्भर रहो मत अपने "आत्मा के आंनद" के साथ रहो तो वह आप मे ही है, यह आपको अनुभव होगा।

बचपन हम "तीतली" पकडने के लीये बगीचे मे दौडते थे और आसपास कभी तीतली को हम पकड नही पाये हम तीतली तक पहुचते तो "तीतली" आगे बढ जाती थी और आश्चर्य यह होता था जब हम थककर बैठ जाते थे तो "तीतली" मेरे पास पर आकर बैठती थी इस अनुभव से कहता हु की आप "आंनद" पाने के लिये दौडोगे तो आंनद कभी नही प्राप्त होगा और अन्तरमुख हो जाओगे तो "आंनद" आपके भितर से ही मिलना प्रारंभ होगा। आपके भितर से मीलने वाला आपका स्वंयम का है, आप इस आंनद के लिये कीसी पर निर्भर नही हो आप आंनद पाने के लिये पुर्णत: "स्वावलंबी" हो जिवन मे आप अगर आंनदी रहना चाहते तो आपको कोई दुखी: नही कर सकता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

हमारा वर्तमान का प्रत्येक दिन नही वर्तमान का प्रत्येक क्षण हमारे भवीष्य का निर्माण करना है, वर्तमान का क्षण "बीज" है, तो भवीष्य हमारा वृक्ष है, आप वर्तमान मे जो बोओगे वही भवीष्य मे आने वाला है,

आप वर्तमान मे दुखी: हो और कल्पना करोगे की मेरा भवीष्य बडा सुखी होगा, तो ऐसा कभी भी नही हो सकता कहते है, की कभी रोता हुआ कोई "चित्रकार" हो तो हंसती हुयी "तसवीर" नही बना सकता इस लीये वर्तमान मे स्वयं रहो वर्तमान मे आंनदी रहो वर्तमान मे प्रसन्न रहो. आप यह नही रहते आना तो जो सदा आंनदी या प्रसन्न रहते है, उनके साथ रहो आप "अंन्तरमुखी" होना सीख जाओ तो आप सदैव अपने आत्मा के साथ ही रहोगे और सदैव आत्मा से आपको प्रत्येक क्षण आंनद ही मीलते रहेगाँ।

हमारी सामान्य सी आदत रहती है, हम 80%. भुतकाल मे ही रहते है, और 20%. भवीष्यकाल की चिंन्ता करते रहते है, हम वर्तमान मे कभी रहते ही नही है, और सारे कार्य तो वर्तमान मे रह करना पडेगे फीर भवि- आपके कार्य मे कोई उर्जा ही नही होगी तो वर्तमान के कार्यो से सफलता जीवन मे कैसे मिलेगी,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

मेरे "साधना काल" मे जब हिमालय मे सालो तक रहा तब मेरे पास एक "झोले" के अलावा कुछ सामान नही रहता था, क्योकी जितना वजन होगा पहाड पर चढने मे काफी कठनाई आयेगी इस लीये कम से कम सामान होता था और आगे जहॉ पैर रखना है, वह "बर्फ" है, या "पानी" यह ठोककर देखने के लिये एक "डंडा" रहता था, कई बार बर्फ को ठोकने पर निचे पानी होता था, याने सामने रखा हुआ एक कदम भी "मृत्यु" का कारण हो सकता था, क्योकी नीचे पानी भरे गढ्ढे मे गिर जाने पर वहॉ निकालने वाला कोई दुसरा नही होता था अब सोचता हु तो लगता है। प्रत्येक कदम कदम पर "मृत्यु" का सामना कीया है,

रास्ते मे कई जगह जानवरो के मनुष्यो के "मृत" "शरीर" भी मीलते थे उन्हे भी पार कर जाना होता था जो ऋषी मुनी भी कही गुफा मे बैठकर ध्यान करते थे वे वही अपने प्राण वही त्याग देते थे इस लिये गुफाओ मे प्राय मानव कंकाल मीलना तो आम बात थी ऐसे वातावरण मे रहकर कभी भी न तो डर लगा और न कभी नकारात्मक विचार आये ऐसे स्थानो पर बैठकर मै उनकी आत्मा के लीये सदैव प्रार्थना करता था आज लगता है, की उन्ही की कृपा से जिवन मे "आध्यात्मिक प्रगती" कर सका।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

पता नही क्यो हिमालय मे चित्त जाने पर वहाँ रखो जाता है. मेरा कहना यह था की ऊपर जिसे चढना है, उसने अपने पास कम से कम सामान रखना चाहीये,
ठीक इसी प्रकार से ध्यान मार्ग मे जिसे ऊपर चढना है, उसने अपने भुतकाल का वजन खाली करना आवश्यक है, प्राःय भुतकाल की घटनाओ लगाव के कारण ही याद रखती है, सडक पर चलते कोई अपरिचीत व्यकती अपने से बुरा व्यवहार करता है, वह हम आसानी से भुल भी जाते है, पर अगर अपने ही परिवार का सदस्य अपने से बुरा व्यवहार करता है, वह हमे सदैव याद रह जाता है, मुख्य समस्या "भुतकाल" की नही लगाव की है, आप अगर अपने आत्मा के साथ लगाव रखेगे तो आप अनुभव करेगे की आप का अन्य लोगो से लगाव कम हो गया है, दुसरा नो "लगाव" जिवंन्त मनुष्य की पहचान है, वह होना ही चाहीये वह जिवन का सहारा है, लेकीन लगाव ऐसे ध्यान से हो जो हमे संशकत करे न की कमजोर करे इस लीये आपका लगाव अपनी आत्मा से होना चाहीये "सदगुरु" के माध्यम से मैंने जिवन मे आत्मा से लगाव करना सीख लीया अब मेरा साथी मेरा "मीत" मेरी आत्मा ही होती है, जब उसके साथ रहता हु, तो उसीका एक आनंद है, इसी आंनद को "आत्मानंद" कहते है.

एक बार आपको यह करना आ गया तो आपको एकांत मे भी "आंनद" प्राप्त होगा। आप अपनी ही "मस्ती" मे मस्त रहोगे आपको आंनद के लिये कीसी दुसरे व्यकती या वस्तु की आवश्यकता ही नही रहेगी।
यह स्थिती हम अंन्तरमुखी होने पर ही प्राप्त होती है। और अंन्तरमुखी हम तभी हो सकते है, जब हमारे सामने "सदगुरु" रुपी आयना हो जिस प्रकार से आयना के बीना हम अपना चेहरा नही देख सकते है, ठीक वैसे ही "सदगुरु" के बीना अंन्तरमुखी नही हो सकते जिस प्रकार हमारा आयना जितना साफ होगा हमें अपना चेहरे का एक एक बाल भी नजर आयेगा ठीक वैसे ही सदगुरु रुपी आयने को हम श्रद्धाभाव से साफ रख सकते है। यह मैने जिवन मे कीया है, और जितना अधीक श्रद्धा का भाव रखा मुझे अंन्तरमुखी होने मे उतनी ही आसानी हुयी मैने अनुभव कीया की सदगुरु का शरीर होता है, पर शरीर का अस्तित्व नही होता है, इसकारण हम जितना उसके प्रती समर्पण करते है, हमारा समर्पण हमारे ही आत्मा के प्रतीहोने लगता है, और इस प्रकार हम सदगुरु के माध्यम से अपने ही शरीर का समर्पण अपनी ही आत्मा के प्रती

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

कर पाते है, और जब पुर्ण समर्पण हो जाता है, तो शरीर भाव पुर्णतह समाप्त हो जाता है, जिवंन्त सदगुरु के प्रती समर्पण का भाव रखना बडा कठीण होता है, हमारे शरीर का अंहकार इसमे सबसे बडी बाधा है, इस लीये आसान मार्ग है, आप अनुभुतीयो पर ध्यान दे।

शरीर भाव समाप्त होने पर आत्मभाव जाग्रत हो जाता है, और आत्मा के गुण विकसीत होने लगते है, आत्मा के प्रमुख गुण इस प्रकार से समझे जा सकते है।

(4) अहोभाव का भाव निर्माण होना

हमारे लीये कोई कुछ भी करे तो हमारा दिल एक अहोभाव से भर जाता है, सामने वाला अपनी ओर एक कदम भी चले तो हमे उसकी ओर दस कदम चलने कि इच्छा होती है, कोई हमारे थोडा भी कुछ करे हमे उसके लीये खुब कुछ करने की इच्छा होती है, और केवल इच्छा नही होती हम करते भी है, जब तक नही करते है, बैचैनी सी लगती है, सदैव दुसरो के लीये कुछ न कुछ करने का ही मन करता है, और कुछ नही कर सके तो सदैव सब का भला हो यह भाव से "प्रार्थना" करने से मन को अच्छा लगता है

(२) सदगुरु का महत्व समझना

हमे आत्मभाव जागृत होने पर सदगुरु के जिवनकाल का महत्व समझने लगता है, "सदगुरु" का जिवन का एक एक क्षण महत्वपुर्ण है, इसका एहसास होता है, जिस सदगुरु अपने जिवनकाल मे लाखो आत्माओ से जुडा है, और लाखो आत्मा जिस "सदगुरु" से जुडी है, तो उसका "दर्शन" होना ही अपना अहोभाग्य है, इसका अहसास होता है।

हमे "सदगुरु" का महत्व समझ मे आने पर समझो हमे कभी उसका सान्निध्य मीला तो बेकार के प्रश्न पुछकर या बेकार की अनावश्यक बाते कर के हम उसके जिवन का "बहुमुल्य क्षण" बेकार नही गंवाते है, हम उसके मीले सान्निध्य का लाभ अपनी अन्तरमुखी स्थिती करने मे ही उपयोग करते है। गुरु सान्नीध्य का सबसे अच्छा उपयोग अन्तरमुखी करने के लीये ही करना चाहीये। अब आयने का उपयोग तो अपने आप को देखने के लिये ही किया जाता है, न बस ऐसा ही सदगुरु भी "आयना" ही है, इसमे अपने आत्मा को देखो और आप देख सकते हो, अन्तरमुख होने पर आपको आपके दोष दिखना प्रारंभ होगे।

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(3) सदैव वर्तमान मे रहना — एक बार जिवन मे
जिवन मे आत्मा की अनुभुती का आंनद मीलने
पर सदैव वर्तमान काल मे रहने को अच्छा लगता
है, वह इस लीये लगता है, क्योकी वर्तमान काल
मे रहने पर "अनुभुती का आंनद" मीलता है, यह
अनुभव होता है

हमारा चित्त बार 2 अनुभुती पर जाता है, तो स्वाभावीक
ही हम वर्तमान काल मे रहने लगते है, और कुछ साल
तक यह अभ्यास होने पर हमारा वर्तमान काल मे ही
रहना "स्वभाव" ही बन जाता है क्षणीक रुप से कभी
भुतकाल के या भवीष्यकाल का कोई विचार भी
आया तो भी जिस प्रकार से पानी का बुलबुला
बरसात के दिनो मे हम देखते वह क्षण मे तैयार
होता है, और क्षण मे समाप्त हो जाता है, बीलकुल
ठिक ऐसा ही हमारे विचार की अवस्था भी सदैव
क्षणीक होती है और ऐसे क्षणीक विचार का
हमारे चित्त की शुद्धता पर कोई प्रभाव नही पडता
है

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(4) क्षमा भाव का निर्माण होना. "क्षमा" करने की शक्ती
एक बहुत बडी क्षमा करने की शक्ती होती है, क्षमा
भाव निर्माण होना एक सशक्त चित्त की पहचान है।
सशक्त चित्त से ही क्षमा भाव उत्पन्न होता है।
सदैव क्षमा करना यह आत्मा का एक महत्वपूर्ण गुण
है।
हमारी आत्मा जैसे२ शुद्ध होने लगती है, आत्मा का
मुल स्वभाव हमे हमारे जिवन पर ही अनुभव होने-
लगता है। "क्षमा" वह झाडु है, जो भुतकाल के
जमा कचरे को साफ करने का कार्य करती है।
जहाँ एक ओर वह भुतकाल के कचरे को दुर कर
चित्त को शुद्ध करती है, वही दुसरी ओर जो भुतकाल
के कचरे को लेकर हम जिवन जीते है, उस कचरे
के अनावश्यक भार को भी "कम" करती है क्षमा
साथ साथ चित्त को पवित्र और सशक्त भी करती
है, क्योकी मैं का "अहंकार" कम कीये बिना क्षमा
करना संभव ही नही है, अहंकारी व्यक्ती कभी
भी किसी को क्षमा कर ही नही सकता है।
क्षमा आत्मा का विशेष गुण है।

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(5) <u>करुणा भाव</u> — आत्मा का यह एक बडा ही अच्छा गुण है. आत्मा के शुद्धता के साथ-साथ करुणा का गुण भी विकसीत होता है, कुछ समय के बाद तो करुणा करना स्वभाव ही हो जाता है।

इसमे हमे "दया" और "करुणा" मे भी अंतर को समझना आवश्यक है, दया शरीर से की जाती है, दया करना शरीर से होता है अहंकारी व्यक्ती भी दया कर सकता है. लेकीन अहंकारी व्यक्ती "करुणा" नही कर सकता है, करुणा का संबन्ध विशुद्ध आत्मभाव से होता है, आत्मा सशक्त व शुद्ध हुये बीना किसी से करुणा करना संभव नही है करुणा शब्द थोडासा प्रार्थना के करीब का है दया की हुयी दिख सकती है, क्योंकी वह शरीर से होती है, करुणा की हुयी दिखती नही है, पर जिस पर की जाती है, वह केवल उसे ही अनुभव होती है करुणा तो सदैव आत्मा से आत्मा तक होती है. वह बीच मे किसी को दिखती नही है. करुणा करने के लिये आपकी स्वयम की आध्यात्मिक स्थिती की आवश्यकता होती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

(6) संपुर्ण समाधान की प्राप्ती

मनुष्य की आवश्यकतारो तो अनेक होती है, और जन्म से लेकर मृत्यु तक वह कभी समाप्त हो नही होती है, क्योंकी आवश्यकताओ का संमन्ध सदैव शरीर के साथ होता है, इस लीये हममे जब तक शरीर भाव है, हमे आवश्यकतारे तो होगी ही और जिवन मे कभी समाधान नही मीलेगा.

इन आवश्यकताओ की जननी है, शरीरभाव का होना क्योकी जब तक शरीर भाव है, आवश्यकतारे होगी ही इस लीये जैसे२ शरीर का समर्पण आत्मा के प्रती होने लगता है, वैसे२ शरीरभाव कम होने लगता है, और आवश्यकतारे भी कम होने लगती है, मनुष्य का सबसे बडा आत्मसमाधान है, "परमात्मा" की प्राप्ती वह प्राप्ती जिसे हो गयी वह फीर अपने ही मस्ती मे रहता है, फीर आवश्यकताओ का महत्व ही नही रह जाता, कुछ मीला तो भी ठीक नही मीला तो भी ठीक वाला स्वभाव ही हो जाता है, क्योकी उस मनुष्य को समाधान उसकी आत्मा के सानीध्य मे ही मिलने लग जाता है, वह आत्म समाधानी हो जाता है, और वह समाधान पाने के लीये किसी व्यक्ती या वस्तु पर निर्भर नही होता आत्मनिर्भर हो जाता है

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

(7) सुरक्षितता का अनुभव होना

अपने आप को सदैव असुरक्षीत समझना सदैव मेरा कुछ बुरा होगा यह सोचना अत्याधीक शरीरभाव के कारण ही होता है आज सारे मानव जाती की ही यह बहुत बड़ी समस्या है क्योंकी आज मनुष्यो मे "शरीरभाव" बहुत ही अधीक हो गया है,
कई बार तो यह असुरक्षीतता की भावना ही जिवन को असुरक्षीत स्थिती मे ले आती है। आपके भीतर का जैसे २ आत्मभाव विकसीत होता है। आपको इन नकारात्मक विचारो से मुक्ती मील जाती है। जब आपके पास नकारात्मक विचार ही नही होते तो जिवन मे कोई भी नकारात्मक घटना आपके जिवन मे कैसे घट सकती है उनका "आभामंडल" ही उन्हे पुर्ण सुरक्षा प्रदान करता है, मैने कई घटनाऐ तो ऐसी देखी है, जिसमे सदैव नकारात्मक विचार करने से नकारात्मक घटनाओ को लोग आमन्त्रीत करते है नकारात्मक घटनाओ की "जननी" नकारात्मक विचार ही होते है, आप मे अधीक शरीरभाव होने पर ही आप को लगेगा आप को कोई हानी पहुचा सकता है, अगर आत्मभाव विकसीत हो गया तो आत्मा को कोई हानी नही पहुचा सकता क्योकी आत्मा ही "परमात्मा" होता है,

(8) विशुद्ध प्रेम का भाव निर्माण होगा

आप के मन सभी के लिये "प्रेम" का भाव विकसीत होता जिस प्रकार है, की परमात्मा सभी को समान देता है, ठीक वैसे ही आप भी प्रत्येक को प्रेम करने लगते है। आपके मन के भितर किसी के लिये भी बुराभाव नही होता है सामने वाला आप से प्रेम करता हो या न हो आप सभी से प्रेम करने लगजाते है। क्योकी यह आत्मा का गुण है। यह प्रेम किसी सीमा या स्वार्थ से बंन्धा नही होता है आप प्रत्येक को प्रेम करते है। आप का प्रेम किसी अपेक्षा से नही होता है। आपमे आत्मभाव विकसीत हो जाने पर सभी को प्रेम करना आपका स्वभाव हो जाता है प्रेम तो आत्मा रूपी फुल की सुगन्ध है। वह तो आत्मा का फुल जब जिवन मे खिलता है, तो प्रेम की "सुगन्ध" तो निर्माण होना स्वाभावीक ही है और हममे आत्मभाव तो तभी विकसीत हो सकता है, जब हम नियमीत रूप से ध्यान के साथ आत्मा के सान्निध्य मे सतत रहे यह सब स्थिती शरीर के प्रयास से कभी पायी नही जा सकती है। अपने आपको रिक्त करने पर स्वियम ही हो जाती है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

यह सब बताने का "उद्देश" एक ही है, मैं भी आपके समान ही "सामान्य मनुष्य" हु. और यह सब स्थिती मैं मेरे जिवन मे अनुभव कर पा रहा हु तो आप यह क्यो अनुभव नही कर सकते आप अपने आप को कमजोर मन समझो आप वह दिव्य और पवित्र आत्मा हो जिन्हे आपके जिवनकाल मे "आत्मसाक्षात्कार" मीलना है, अब आप कहोगे हम हिमालय नही जा सके किसी भी सद्गुरु ने हमे "अधीकृत" नही कीया। अरे बाबा ठीक है, सभी परिवार के सदस्य थोड़े ही वैष्णवदेवी के मंदीर जा पाते है, परिवार का एक सदस्य जाता है, और वहाँ मीलका प्रसाद लाकर घर के सभी सदस्यो को बांटना हो ठीक वैसा ही मुझे उन्होने बुलाया और मेरा नेपाल जाना हुआ और उन्होने मुझे अधीकृत माध्यम बनाकर एक "सद्गुरु" के रुप मे प्रस्तुत कीया और मैं उन्हीका का कार्य कर रहा हु, कार्य वे ही कर रहे है, केवल मैं दिख रहा हु. और जो "आत्मसाक्षात्कार" का प्रसाद मुझसे मीला है, वही तो आपको घर बैठे दे रहा हु. आपको सद्गुरु बनने को नही कह रहा हु. पर आप अपने "गुरु" तो बन ही सकते हो अपने "गुरु" बनो।

"आत्मसाक्षात्कार" से अधीक बाहर से पाने के लीये
कुछ भी आध्यात्मीक क्षेत्र मे नही है वही मैंने सालो
के बाद पाया है, आपको आसानी से दे रहा हुँ,
अरे बाबा सभी पंतगे तो अंन्त मे कचरे मे ही चली
जाती है, पर प्रत्येक पंतग कचरे मे जाने के पुर्व
अपनी जिन्दगी मे एक बार तो आकाश को छु
ही लेती है।

आपका भी शरीर मीट्टी का बना है, एक दिन
वह भी मीट्टी हो जायेगा। पर वह मिट्टी मे जाने
के पुर्व एक बार "मोक्ष की स्थिती" तो पा कर ही
रहो और आपने "आत्मसाक्षात्कार" पाया है, इसलीये
मुझे पुर्ण विश्वास है, वह "कर्ममुक्त अवस्था" आप
आपके इसी जिवन मे पा सकते तो प्रत्येक व्यक्ती
आप के जैसा भाग्यवान नही होता जो सद्गुरु का
सानीध्य पा सके इस लीये आपको आपके जाती
मे, आपके धर्म मे, आपकी भाषा मे, आपके प्रदेश,
मे आपके देश मे, यह परमात्मा के अनुभुती का
संस्कार प्रत्येक मनुष्य तक पहुचाना चाहिये मेरे द्वारा
हिमालय से समाज तक आया है, अब आपके
द्वारा प्रत्येक मनुष्य तक पहुचाना चाहिये। आप अगर

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

सामने वाले का कल्याण करने का भाव रख कर करोगे
तो ही यह "गुरुकार्य" आपके हाथ से होगा। आप यह कार्य
अपेक्षा रहीत हो कर करे. आपको स्वयम को इसमे आने
मे कितना समय लगा है, वह ध्यान मे रखो। तो सामने
वाला एकदम से इसे ग्रहण करेगा। यह आशा कभी भी
मत रखो।

वास्तव मे मुक्त होना याने सब मेसे ही मुक्त होना
है, यह समर्पण संस्कार से आपने जो अनुभुती का
ज्ञान प्राप्त कीया। आपको इस आत्मज्ञान से मुक्त
होना पडेगा और इसमेसे मुक्त होने के लीये आपको
यह ज्ञान की अनुभुती कीसी और आत्मा को दान
कर इस "आत्मज्ञान" से भी मुक्त होना पडेगा। हिमालय
के गुरु व ज्ञान मुझे सौंपकर मुक्त हो गये और मैं आपको
देकर मुक्त हो गया अब आप भी कीसी अन्य आत्माको
देकर मुक्त हो, यही प्रभु से प्रार्थना है. आप सभी को
खुब खुब आर्शीवाद

आपका अपना
बाबास्वामी
7/2/2019